IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 12, Issue 1, January- February 2025

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.583

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 1, January- February 2025 |

भारत में कृषि श्रमिकों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

सुरेन्द्र

शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

सारांश

भारत, एक कृषि प्रधान देश होने के नाते, अपनी अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण योगदान देखता है। इस क्षेत्र में श्रमिकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो न केवल खेतों में काम करते हैं बल्कि देश की खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी सहारा देते हैं। दुर्भाग्यवश, भारत में कृषि श्रमिकों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति अक्सर दयनीय होती है। वे गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा और सामाजिक भेदभाव का शिकार होते हैं। उनकी मेहनत का उचित मूल्य नहीं दिया जाता है, और वे अक्सर शोषण के शिकार होते हैं। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (एनएसएसओ) के आंकड़ों के अनुसार, भारत में 2021–22 में कृषि क्षेत्र में लगभग 144 मिलियन श्रमिक थे। इनमें से अधिकांश श्रमिक सीमांत और छोटे किसान हैं, जिनके पास अपनी जमीन नहीं है या बहुत कम जमीन है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) के एक अध्ययन के अनुसार, भारत में लगभग 40 प्रतिशत कृषि श्रमिक गरीबी रेखा से नीचे रहते हैं। उनकी औसत आय राष्ट्रीय औसत आय से बहुत कम है। कृषि श्रमिकों की सामाजिक स्थिति भी चिंताजनक है। वे अक्सर अशिक्षित होते हैं और उनके पास स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी बुनियादी सेवाओं तक पहुंच नहीं होती है। वे सामाजिक भेदभाव और उत्पीड़न का भी शिकार होते हैं। यह शोध–पत्र भारत में कृषि श्रमिकों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। जिसके माध्यम से कृषि श्रमिकों की समस्याओं, उनकी जीवन शैली और उनके सामाजिक–आर्थिक अधिकारों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध–पत्र का प्रमुख उद्देश्य यह समझना है कि कृषि श्रमिक किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करते हैं, और सरकार ने उनके सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए क्या–क्या प्रयास किए है।

मूल शब्द – कृषि श्रमिक, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, न्यूनतम मजदूरी, ग्रामीण अर्थव्यवस्था

प्रस्तावना :

भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का महत्वपूर्ण स्थान है, जो न केवल खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करता है, बल्कि लाखों लोगों के लिए आजीविका का प्रमुख स्रोत भी है। हालांकि, पिछले कुछ दशकों में औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के कारण कृषि श्रमिकों की संख्या में कमी देखी गई थी, लेकिन हाल के वर्षों में यह प्रवृत्ति उलटती हुई प्रतीत होती है। वर्ष 2017–18 से 2023–24 के बीच कृषि क्षेत्र में लगभग 6.8 करोड़ (68 मिलियन) नए श्रमिक जुड़े हैं, जो एक महत्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन का संकेत है।[6] इस वृद्धि के पीछे कई कारक हो सकते हैं, जैसे कि कोविड–19 महामारी के दौरान शहरी क्षेत्रों से ग्रामीण क्षेत्रों की ओर श्रमिकों का पलायन, गैर–कृषि क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की कमी, और कृषि में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी। हालांकि, यह वृद्धि आर्थिक विकास के सामान्य पैटर्न के विपरीत है, जहां श्रमिक आमतौर पर कृषि से उद्योग और सेवा क्षेत्रों की ओर स्थानांतरित होते हैं। इस उलट प्रवृत्ति से यह स्पष्ट होता है कि उच्च उत्पादकता वाले क्षेत्रों में रोजगार सृजन की गति पर्याप्त नहीं है, जिसके परिणामस्वरूप श्रमिकों को पुनः कृषि की ओर लौटना पड़ रहा है। कृषि श्रमिकों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को समझने के लिए कुछ प्रमुख आंकड़ों पर ध्यान देना आवश्यक है। दिसंबर 2024 में कृषि श्रमिकों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) 1320 के स्तर पर स्थिर रहा, जबकि वर्ष–दर–वर्ष मुद्रास्फीति दर 5.01 प्रतिशत दर्ज की गई, जो पिछले वर्ष की तुलना में कम है।[7] इसके अतिरिक्त, कृषि मजदूरी प्रभाग द्वारा संकलित आंकड़ों के अनुसार, विभिन्न राज्यों में कृषि श्रमिकों की औसत दैनिक मजदूरी में भी उतार–चढ़ाव देखा गया है, जो उनकी आर्थिक स्थिरता को प्रभावित करता है।[8] इन आंकड़ों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि कृषि श्रमिकों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार की आवश्यकता है। उनकी आय, रोजगार की स्थिरता, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंच, और सामाजिक सुरक्षा जैसे मुद्दों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, ताकि वे समाज की मुख्यधारा में शामिल हो सकें और उनके जीवन स्तर में सुधार हो सके।

शोध के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध–पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य है–

- भारत में कृषि श्रमिकों की सामाजिक स्थिति का वर्णन करना।
- भारत में कृषि श्रमिकों की आर्थिक स्थिति का वर्णन करना।
- भारत एवं विकसित देशों के कृषि श्रमिकों कि तुलना करना
- कृषि श्रमिकों के समक्ष सामाजिक–आर्थिक चुनौतियों का अध्ययन करना
- कृषि श्रमिकों की समस्याओं के कारणों का विश्लेषण करना।

आंकड़ों के स्रोत :

यह शोध–पत्र गुणात्मक और मात्रात्मक डेटा के आधार पर लिखा गया है। जिस हेतु आंकड़ों का संकलन विभिन्न स्रोतों यथा सरकारी रेपोर्ट्स, विभिन्न शोध आलेखों एवं अन्य प्रासंगिक स्रोत की सहायता से किया गया है तथा विषय से संबन्धित नवीन आंकड़ो के संग्रहण हेतु ऑनलाइन स्रोतों की भी सहायता ली गयी है।

कृषि श्रमिकों की सामाजिक स्थिति :

भारत में जनसंख्या का एक बड़ा वर्ग कृषि एवं उससे जुड़े कार्यों में संलग्न है। देश में कृषि श्रमिकों की सामाजिक स्थिति को निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत विश्लेषित किया जा सकता है–

- **जातिगत संरचना और सामाजिक वर्गीकरण –** भारत में कृषि श्रमिकों की जातिगत संरचना विविध है, जिसमें अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी), अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी), और सामान्य वर्ग के लोग शामिल हैं। हालांकि, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोग कृषि श्रमिकों के एक बड़े हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों में आते हैं। इन समूहों के लोग अक्सर भूमिहीन होते हैं और कृषि में मजदूरी पर निर्भर रहते हैं। जातिगत भेदभाव और सामाजिक असमानता के कारण, इन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, और अन्य बुनियादी सुविधाओं तक पहुंच में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
- **कृषि श्रमिकों में महिलाओं की भागीदारी और उनकी स्थिति –** महिलाएं भारतीय कृषि कार्यबल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। वर्ष 2004–05 के दौरान, महिला श्रमिकों की संख्या 146.89 मिलियन थी, जिसमें से लगभग 106.89 मिलियन (72.8 प्रतिशत) महिलाएं कृषि कार्यों में संलग्न थीं।[9] हालांकि, महिला श्रमिकों की संख्या में वृद्धि हुई है, लेकिन उनकी श्रम भागीदारी दर पुरुषों की तुलना में कम है। 2011 की जनगणना के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों में महिला श्रम भागीदारी दर 30.79 प्रतिशत थी, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह मात्र 11.88 प्रतिशत थी।[10] महिला कृषि श्रमिकों को पुरुषों की तुलना में कम मजदूरी मिलती है, और वे सामाजिक भेदभाव, भूमि स्वामित्व की कमी, और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सीमित भागीदारी जैसी चुनौतियों का सामना करती हैं।
- **शिक्षा स्तर और साक्षरता दर –** कृषि श्रमिकों के बीच शिक्षा का स्तर सामान्यतः निम्न होता है। विशेषकर महिला कृषि श्रमिकों में साक्षरता दर कम है, जो उनकी सामाजिक और आर्थिक प्रगति में बाधा उत्पन्न करती है। शिक्षा की कमी के कारण, वे कृषि में नवीनतम तकनीकों और विधियों को अपनाने में असमर्थ रहती हैं, जिससे उनकी उत्पादकता और आय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा की कमी के कारण, वे अपने अधिकारों और सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूक नहीं हो पाती हैं, जिससे वे इनका लाभ नहीं उठा पाती हैं।

- **स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता और सामाजिक सुरक्षा** – कृषि श्रमिकों, विशेषकर महिलाओं, को स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंच में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। स्वच्छ पानी, स्वच्छता सुविधाओं, और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। इसके अलावा, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की पहुंच भी सीमित है, जिससे वे बीमारियों, दुर्घटनाओं, और वृद्धावस्था में आर्थिक असुरक्षा का सामना करती हैं। सरकारी योजनाओं के बावजूद, जागरूकता की कमी और कार्यान्वयन में कमियों के कारण, कई श्रमिक इनका लाभ नहीं उठा पाते हैं।
- **श्रमिकों के पारिवारिक और सामाजिक जीवन पर प्रभाव** – कृषि श्रमिकों की आर्थिक अस्थिरता और निम्न आय उनके पारिवारिक और सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव डालती है। आय की कमी के कारण, वे अपने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने में असमर्थ रहते हैं, जिससे अगली पीढ़ी भी गरीबी के चक्र में फंस जाती है। इसके अलावा, सामाजिक भेदभाव और निम्न सामाजिक स्थिति के कारण, वे सामाजिक गतिविधियों और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सीमित भागीदारी कर पाते हैं, जिससे उनका सामाजिक एकीकरण प्रभावित होता है।

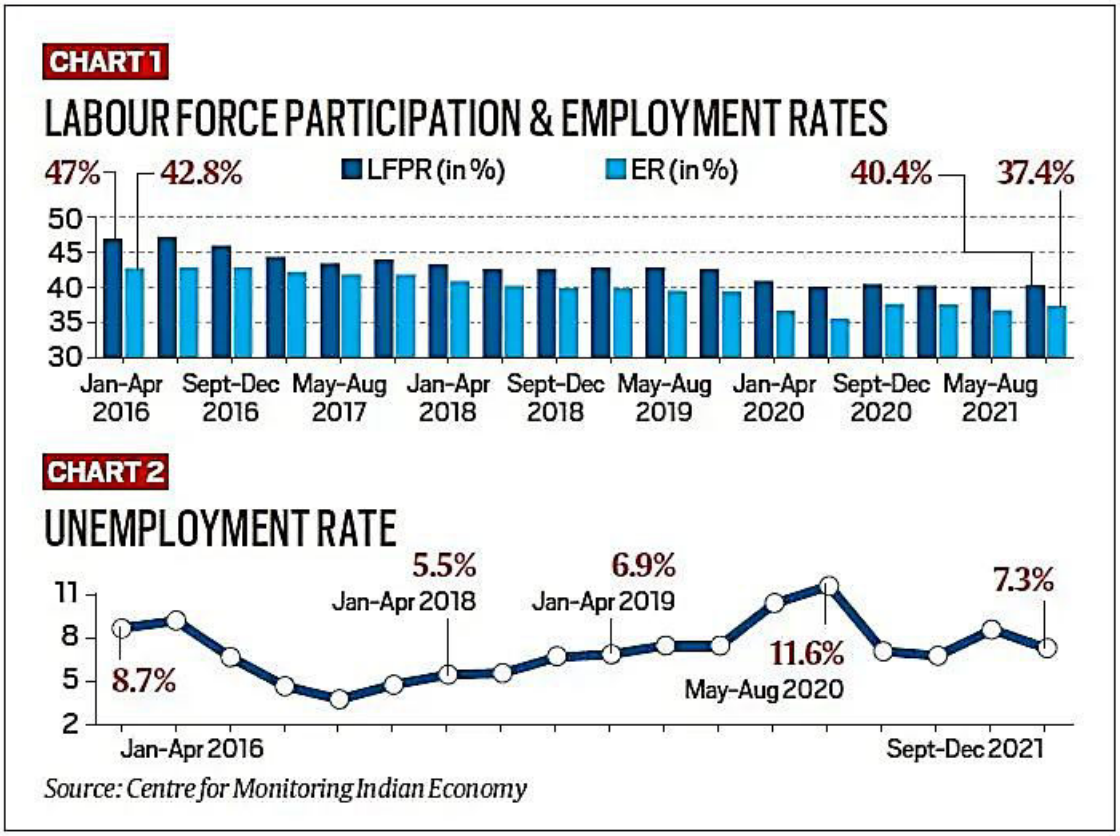

Source – Center for monitoring Indian Economy, 2021

भारत में कृषि श्रमिकों की आर्थिक स्थिति :

देश में कृषि कार्यों में संलग्न श्रमिकों की सामाजिक स्थिति के साथ साथ उनकी आर्थिक स्थिति भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इन श्रमिकों की आर्थिकस्थिति का विश्लेषण निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत किया जा सकता है–

- **औसत आय और मजदूरी दर –** कृषि श्रमिकों की औसत आय और मजदूरी दर राज्य, कार्य के प्रकार, और कौशल स्तर के आधार पर भिन्न होती है। सितंबर 2024 में, भारत सरकार ने असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों, जिनमें कृषि श्रमिक भी शामिल हैं, के लिए न्यूनतम मजदूरी में वृद्धि की घोषणा की। इस संशोधन के अनुसार, अकुशल श्रमिकों के लिए दैनिक न्यूनतम मजदूरी 783 रुपये, अर्ध–कुशल श्रमिकों के लिए 868 रुपये, और उच्च–कुशल श्रमिकों के लिए 1,035 रुपये निर्धारित की गई है।[11] हालांकि, वास्तविक मजदूरी दरें अक्सर इन निर्धारित न्यूनतम मजदूरी से कम होती हैं, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, जहां श्रमिकों की सौदेबाजी की शक्ति सीमित होती है। अर्थशास्त्र एवं सांख्यिकी निदेशालय के अनुसार, 21 राज्यों में खेतिहर मजदूरों और अन्य तीन ग्रामीण मजदूरों को दी जाने वाली प्रचलित औसत दैनिक मजदूरी के आंकड़े संकलित और प्रसारित किए जाते हैं।[12]
- **भूमि स्वामित्व की स्थिति (भूमिहीन मजदूरों की समस्या) –** भारत में कृषि श्रमिकों का एक बड़ा हिस्सा भूमिहीन है, जो उन्हें आर्थिक रूप से असुरक्षित बनाता है। भूमिहीनता के कारण, ये श्रमिक पूरी तरह से मजदूरी पर निर्भर रहते हैं और भूमि से संबंधित किसी भी लाभ से वंचित होते हैं। भूमि सुधार कार्यक्रमों के बावजूद, भूमि का असमान वितरण एक प्रमुख समस्या बनी हुई है, जिससे सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ बढ़ती हैं।
- **ऋणग्रस्तता और साहूकारी व्यवस्था –** कृषि श्रमिकों को अक्सर अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ऋण लेना पड़ता है। औपचारिक बैंकिंग सुविधाओं की पहुंच में कमी के कारण, वे स्थानीय साहूकारों से उच्च ब्याज दरों पर ऋण लेने के लिए मजबूर होते हैं, जिससे उनकी ऋणग्रस्तता बढ़ती है। उच्च ब्याज दरों और ऋण चुकाने में असमर्थता के कारण, कई श्रमिक ऋण के जाल में फंस जाते हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति और भी खराब हो जाती है।
- **आजीविका की अस्थिरता और मौसमी बेरोजगारी –** कृषि कार्य मौसमी होने के कारण, श्रमिकों को वर्ष के कुछ महीनों में बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है। मौसमी बेरोजगारी के कारण उनकी आय में अस्थिरता आती है, जिससे उनके जीवन स्तर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त, प्राकृतिक आपदाओं, जैसे सूखा, बाढ़, या फसल की विफलता, के कारण भी उनकी आजीविका प्रभावित होती है, जिससे उनकी आर्थिक असुरक्षा बढ़ती है।

- **सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम मजदूरी बनाम वास्तविक मजदूरी** – हालांकि सरकार ने कृषि श्रमिकों के लिए न्यूनतम मजदूरी दरें निर्धारित की हैं, लेकिन वास्तविकता में कई श्रमिकों को इन दरों से कम भुगतान किया जाता है। न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948 के तहत, विकलांग व्यक्तियों के लिए भी न्यूनतम मजदूरी की दर समुचित श्रेणी के स्वस्थ व्यक्ति के समान ही होनी चाहिए।[13] इसके बावजूद, श्रमिकों की कम सौदेबाजी शक्ति, जागरूकता की कमी, और श्रम कानूनों के अपर्याप्त प्रवर्तन के कारण, उन्हें निर्धारित न्यूनतम मजदूरी से कम भुगतान मिलता है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

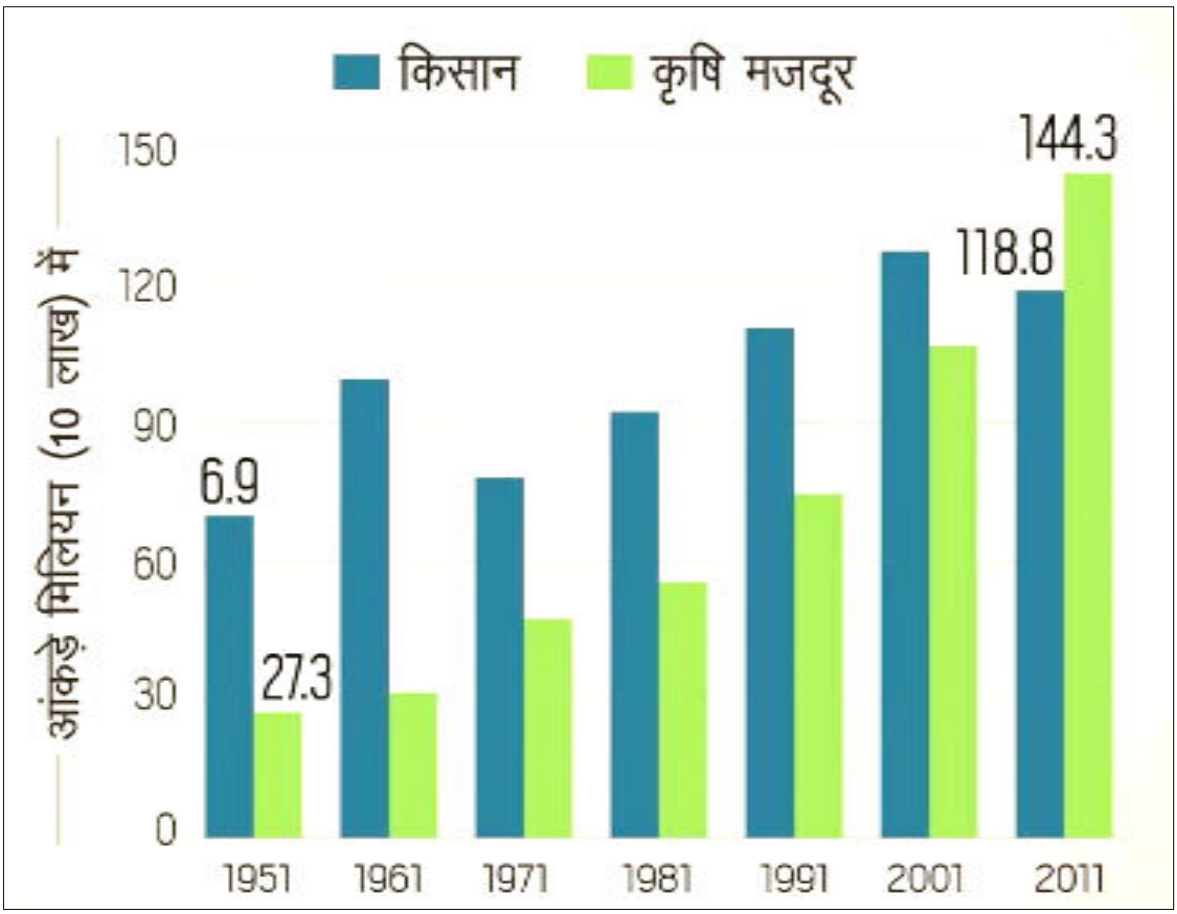

Source – Ashok dalwani Committee Report, Vol 1, 2017

श्रमिकों के समक्ष सामाजिक–आर्थिक चुनौतियाँ

भारत में कृषि श्रमिकों को अनेक सामाजिक–आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो उनकी जीवन गुणवत्ता और आर्थिक स्थिरता को प्रभावित करती हैं। इन चुनौतियों का विश्लेषण करते हुए नवीनतम आंकड़ों के साथ निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार किया जा सकता है–

- **शोषण और बंधुआ मजदूरी की समस्या :** अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) की एक रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक स्तर पर जबरन मजदूरी के मामलों में निजी क्षेत्र की भूमिका प्रमुख है। कृषि क्षेत्र में, लगभग 12 प्रतिशत (21 लाख) श्रमिक जबरन मजदूरी का शिकार हैं। इस शोषण से निजी क्षेत्र को सालाना लगभग 19.6 लाख करोड़ रुपये का अवैध मुनाफा होता है।[14]
- **मशीनीकरण और रोजगार पर प्रभाव –** कृषि में बढ़ते मशीनीकरण ने श्रमिकों की मांग को प्रभावित किया है। उदाहरण के लिए, पंजाब में प्रमुख कृषि कार्यों का मशीनीकरण, प्रवासी मजदूरों का आगमन, और कृषि विकास की धीमी गति के कारण खेतिहर मजदूरों की रोजगार स्थिरता में कमी आई है।[15]

- **पलायन और शहरी श्रम बाजार में समावेशन** – आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, 2017–18 से 2022–23 के बीच, भारत में सृजित 10 करोड़ नौकरियों में से 4.8 करोड़ कृषि क्षेत्र से थीं। हालांकि, अर्थशास्त्रियों का मानना है कि ये नौकरियां अस्थायी और स्व–रोजगार के रूप में हैं, जो शहरी श्रम बाजार में स्थायी समावेशन को नहीं दर्शाती हैं।[16]
- **कृषि श्रमिकों की संगठनात्मक स्थिति (यूनियन और सहकारी समितियाँ)** – कृषि श्रमिकों की संगठनात्मक स्थिति कमजोर है, जिससे वे अपने अधिकारों के लिए प्रभावी ढंग से आवाज नहीं उठा पाते। यूनियनों और सहकारी समितियों की सीमित उपस्थिति के कारण, श्रमिकों को शोषण और अन्याय का सामना करना पड़ता है। सरकार बंधुआ श्रमिक उन्मूलन की दिशा में स्वतंत्रता के समय से ही प्रयासरत है, लेकिन अभी भी चुनौतियाँ बनी हुई हैं।[17]
- **जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाओं का प्रभाव –** भारत में बढ़ते तापमान और अनियमित वर्षा के कारण कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है। इस चुनौती का सामना करने के लिए, वैज्ञानिक जलवायु–प्रतिरोधी बीज विकसित कर रहे हैं। हाल ही में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विभिन्न फसलों के लिए 109 जलवायु–प्रतिरोधी बीजों की शुरुआत की है। हालांकि, किसानों तक इन बीजों की पहुंच और उचित प्रशिक्षण सुनिश्चित करना आवश्यक है।[18]

कृषि मजदूरो की सामाजिक–आर्थिक नीति मे सुधार लाने हेतु किए गए सरकारी प्रयास :

भारत में कृषि मजदूरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न नीतियाँ और योजनाएँ चलाई गई हैं। इनमें से प्रमुख प्रयास निम्नलिखित हैं–

- **न्यूनतम मजदूरी अधिनियम (Minimum Wages Act, 1948)** – इस अधिनियम के तहत कृषि मजदूरों के लिए न्यूनतम मजदूरी निर्धारित की जाती है। राज्य सरकारें समय–समय पर न्यूनतम मजदूरी दरों को संशोधित करती हैं।
- **मनरेगा (महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, 2005)** – यह योजना ग्रामीण क्षेत्रों में 100 दिनों की गारंटीकृत रोजगार उपलब्ध कराती है। कृषि मजदूरों को बेरोजगारी से बचाने और उनकी आय में वृद्धि के उद्देश्य से लागू की गई।
- **प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना (PM-KISAN, 2019)** –छोटे और सीमांत किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है, जिससे वे कृषि मजदूरों को रोजगार दे सकें।
- **प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन योजना (PMSYM, 2019)** – असंगठित क्षेत्र के मजदूरों के लिए पेंशन योजना, जिससे कृषि मजदूरों को वृद्धावस्था में वित्तीय सुरक्षा मिलती है।
- **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA, 2013)** – इस अधिनियम के तहत कृषि मजदूरों सहित सभी गरीब परिवारों को सस्ते दामों पर अनाज उपलब्ध कराया जाता है।
- **प्रधानमंत्री आवास योजना – ग्रामीण (PMAY-G, 2015) – कृषि मजदूरों सहित सभी गरीब परिवार जो** गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाले है को पक्के मकान उपलब्ध कराने के लिए यह योजना चलाई गई।
- **भूमि सुधार और कृषि विकास नीतियाँ** – भूमि सुधार कार्यक्रमों के तहत भूमिहीन कृषि मजदूरों को जमीन उपलब्ध कराने की पहल। ग्रामीण विकास और कृषि में तकनीकी सुधार से मजदूरी और रोजगार के अवसर बढ़ाना।
- **कृषि श्रमिकों के लिए कौशल विकास योजनाएँ** – ग्रामीण कौशल विकास योजनाओं के तहत सभी को को वैकल्पिक रोजगार के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। कृषि मजदूर भी इस योजना से लाभान्वित हो रहे है।

भारत एवं विकसित देशों के कृषि श्रमिकों की तुलना :

भारत और विकसित देशों में कृषि श्रमिकों की स्थिति में महत्वपूर्ण अंतर हैं, जो विभिन्न सामाजिक–आर्थिक कारकों से प्रभावित होते हैं। इन कारकों में श्रमशक्ति की भागीदारी, उत्पादकता, आय स्तर, और रोजगार की स्थिरता शामिल हैं। भारत के कृषिन श्रमिकों एवं विश्व के विकसित देशों में कार्यरत कृषि श्रमिकों का विभिन्न महत्त्वपूर्ण मानदंडों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन निम्न तालिक में दर्शाया गया है। तालिका के अध्ययन से स्पष्ट होता है की भारत में, कृषि क्षेत्र में देश की लगभग आधी श्रमशक्ति कार्यरत है, जबकि जीडीपी में इसका योगदान 17.5 प्रतिशत है (2021–12 के मौजूदा मूल्यों पर) इसके विपरीत, विकसित देशों में कृषि में कार्यरत श्रमिकों का प्रतिशत काफी कम है। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में, कुल श्रमशक्ति का लगभग 1.3 प्रतिशत कृषि में कार्यरत है, जबकि फ्रांस में यह आंकड़ा लगभग 2.8 प्रतिशत है। वहीं भारत में कृषि उत्पादकता विकसित देशों की तुलना में कम है। उदाहरण के लिए, 2021–22 में भारत में गेहूं की उपज 3.3 टन प्रति हेक्टेयर थी, जबकि उसी अवधि में चीन में यह 5.2 टन प्रति हेक्टेयर और अमेरिका में 3.1 टन प्रति हेक्टेयर थी।

तालिका 01 : भारत एवं विश्व के विकसित देशों में कार्यरत कृषि श्रमिकों की तुलना

विवरण	भारत	विकसित देश (जैसे अमेरिका, फ्रांस)
श्रमशक्ति की भागीदारी	कुल श्रमशक्ति का 45% कृषि में कार्यरत	कुल श्रमशक्ति का < 5% कृषि में कार्यरत
कृषि का जीडीपी में योगदान	17.5% (2015–16)	< 2 प्रतिशत (अमेरिका में 1.1प्रतिशत)
औसत आय	8,000–12,000 रूपये प्रति माह (अस्थिर)	$2,500–$4,000 प्रति माह (स्थिर)
उत्पादकता (गेहूं)	3.3 टन/हेक्टेयर	चीन, 5.2 टन/हेक्टेयर अमेरिका, 3.1 टन/हेक्टेयर
रोजगार स्थिरता	मौसमी बेरोजगारी, अस्थिरता	स्थायी रोजगार, न्यूनतम बेरोजगारी
मशीनीकरण स्तर	40–50% (सीमित, छोटे जोतों के कारण)	> 90% (अत्यधिक मशीनीकरण)
सामाजिक सुरक्षा लाभ	न्यूनतम, सरकार द्वारा संचालित योजनाओं पर निर्भर	उच्च सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य बीमा, पेंशन

Source- https://hi.prsindia.org/policy/analytical-reports/

निष्कर्ष :

निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कृषि श्रमिक किसी भी राष्ट्र की खाद्य सुरक्षा और कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ होते हैं। वे खेतों में काम करके हमारे भोजन का उत्पादन करते हैं और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति देते हैं। फिर भी, उनकी सामाजिक स्थिति अक्सर चुनौतीपूर्ण होती है, जिसमें गरीबी, कम मजदूरी, और सामाजिक सुरक्षा की कमी जैसे मुद्दे शामिल होते हैं। भारत में, कृषि श्रमिकों की एक बड़ी संख्या है, और उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार करना एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। उनकी समस्याओं में जातिगत भेदभाव, महिलाओं की कम भागीदारी, शिक्षा की कमी, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच की कमी, और सामाजिक सुरक्षा का अभाव शामिल हैं। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कृषि श्रमिकों की आय के मामले में भी भारत और विकसित देशों के बीच बड़ा अंतर है। भारत में, कृषि श्रमिकों की आय अक्सर अस्थिर और कम होती है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर रहती है। इसके विपरीत, विकसित देशों में कृषि श्रमिकों की आय अपेक्षाकृत अधिक होती है, और उन्हें विभिन्न सामाजिक सुरक्षा लाभ भी प्राप्त होते हैं। साथ ही भारत में कृषि श्रमिकों को मौसमी बेरोजगारी और आय की अस्थिरता का सामना करना पड़ता है। इसके विपरीत, विकसित देशों में कृषि कार्य अधिक मशीनीकृत और संगठित होने के कारण, श्रमिकों को अधिक स्थिर रोजगार और आय प्राप्त होती है। इन अंतरों के पीछे कई कारण हैं, जैसे कि तकनीकी उन्नति, नीतिगत समर्थन, और बुनियादी ढांचे की उपलब्धता आदि। इन समस्याओं का समाधान करने के लिए सरकार, नागरिक समाज और अन्य हितधारकों को मिलकर काम करना होगा।

Refrences:

1. Breman, J. (2019). *At work in the informal economy of India: A perspective from the bottom up.* Oxford University Press.
2. Food and Agriculture Organization. (2022). *The state of food and agriculture: Leveraging automation in agriculture.* FAO. Retrieved from https://www.fao.org
3. International Labour Organization. (2021). *World employment and social outlook: Trends 2021.* ILO. Retrieved from https://www.ilo.org
4. Reddy, D. N., & Mishra, S. (2020). *Rural labour mobility in times of structural transformation: Dynamics and perspectives from Asian economies.* Springer.
5. Srivastava, R., & Padhi, A. (2020). Agrarian labour in India: *Trends, structure, and crises. Economic & Political Weekly, 55*(10), 34-42.

Online Sources:

6. https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/surge-in-agricultural-employment?utm
7. https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=2095472&utm
8. https://desagri.gov.in/HI/divisions-cell/agricultural-wages-division/?utm
9. https://labour.gov.in/
10. https://labour.gov.in/
11. https://www.reuters.com/
12. https://desagri.gov.in/
13. https://labour.gov.in/
14. https://hindi.downtoearth.org.in/
15. https://www.iajesm.in/
16. https://www.reuters.com/
17. https://ijrrssonline.in/
18. https://apnews.com/

IJARASEM

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

निस्केयर
NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com